राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तांत

अंक 3] सप्तम विधान सभा के तृतीय सत्र का प्रथम दिवस [संख्या 1

सोमवार,
14 सितम्बर, 1981

विधान सभा की बैठक म. पू. 11.00 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री पूनमचन्द विश्नोई, अध्यक्ष, पदासीन)

श्री अध्यक्ष : शोकाभिव्यक्ति।

श्री शिवचरण माथुर (मुख्य मंत्री) : माननीय अध्यक्ष महोदय. . . .

श्री अध्यक्ष : कृपया स्थान ग्रहण कीजिये। शोकाभिव्यक्ति से पहले एक छोटा-सा कार्य है जो कानूनी दृष्टि से आवश्यक है इसलिये वह पहले ले लिया जायगा।

सदन की मेज पर रखे गये पत्र

अध्यादेश

श्री राजस्व मंत्री जी।

श्री परसराम मदेरणा (राजस्व मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं निम्नांकित अध्यादेशों एवं प्रक्रिया के नियम 63(2) के अन्तर्गत इन अध्यादेशों को जारी करने के कारणों के विवरणों को सदन की मेज पर रखता हूं :

1. राजस्थान भूमि अर्जन (संशोधन तथा विधिमान्यकरण) अध्यादेश, 1981 (अध्यादेश संख्या 5 सन् 1981)।

2. राजस्थान कृषि जोतों पर अधिकतम सीमा अधिरोपण (संशोधन) अध्यादेश, 1981 (अध्यादेश संख्या 6 सन् 1981)।

शोकाभिव्यक्ति

श्री अध्यक्ष : शोकाभिव्यक्ति।

स्वर्गीय श्री रामकिशोर व्यास, श्री संतोषसिंह कछवाहा, श्री रामसिंह एवं श्री रूपाराम भूतपूर्व सदस्य, राजस्थान विधान सभा को श्रद्धांजलि

श्री शिवचरण माथुर (मुख्य मंत्री) : माननीय अध्यक्ष महोदय, अत्यन्त खेद का विषय है कि हम आज एक ऐसे व्यक्ति के विषय में अपनी शोकाभिव्यक्ति करने के लिए एकत्र हुए हैं जिसने अपने सार्वजनिक जीवन में प्रतिष्ठा अर्जित की और स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी के रूप में अपना प्रारम्भिक जीवन शुरू करने के बाद अनेक पदों पर रहते हुए उन पदों को सुशोभित किया। श्री रामकिशोरजी व्यास, जो आज हमारे बीच में नहीं हैं, हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सेनानी थे। उन्होंने 1942 के आन्दोलन में एक प्रमुख भूमिका अदा की और सन् 1935 में जयपुर के चीफ कोर्ट के अभिभाषक के रूप में वे रजिस्टर हुए। बाद में राजस्थान हाई कोर्ट के अभिभाषक के रूप में रजिस्टर हुए और फिर राजस्थान के सार्वजनिक जीवन में खास तौर से स्वायत्तशासी संस्थाओं से प्रारम्भ कर राजस्थान मंत्रिमण्डल में कई अवसरों पर मंत्री रह कर प्रायः सभी

(श्री शिवचरण माथुर)

विभागों का काम बहुत कुशलतापूर्वक, निष्ठा और ईमानदारी से निभाते हुए भारत के अग्रिम सार्वजनिक नेताओं की पंक्ति में अपने आपको ला सके।

उन्होंने हमारे सम्माननीय सदन के अध्यक्ष पद का कार्य पांच साल तक बहुत सफलतापूर्वक संभाला उनके अध्यक्ष पद के कार्यकाल में अनेक स्वस्थ परम्पराओं का प्रतिष्ठापन हुआ जो आज भी हमारे माननीय सदस्य, इस सदन के लिए एक मार्गदर्शन का काम कर रही है। व्यासजी आज हमारे बीच में नहीं हैं। वे बहुत ही मृदुभाषी, कुशल प्रशासक और कर्मठ राजनैतिक कार्यकर्ता थे। मेरा उनसे बहुत ही व्यक्तिगत और निकट का सम्बन्ध था। जब जब भी कठिन समय उपस्थित हुए उन्होंने सही सलाह मुझे दी। वे एक "फ्रेंड फिलास्फर एण्ड गाइड की तरह से हमेशा अपने साथियों को सलाह दिया करते थे। उनको सार्वजनिक जीवन में सबके साथ मिल कर चलने की एक परम्परा निर्वहन करने का सदैव ध्यान रहा। अगर मैं यह कहूं कि उनका कोई शत्रु नहीं था, अजातशत्रु थे वे, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। हर व्यक्ति से बहुत सरल स्वभाव से मिलना, उसकी बात को समझना और जितना उनसे बन पड़े उसकी मदद करना–यह व्यासजी के स्वभाव का एक मूल गुण था।

अध्यक्ष पद के बाद में कांग्रेस के एक बहुत ही कठिन समय में उन्होंने कांग्रेस (आई) का काम सम्भाला और वह भी बहुत ही सफलतापूवक, निष्ठा और ईमानदारी से। वे अनेक वर्षों तक अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पहले भी रहे और 1978 के बाद में कई वर्षों तक इस पद पर बने रहे। उनकी सेवाओं के प्रतिफल के आधार पर उनको पाण्डीचेरी का राज्यपाल नियुक्त किया गया। उसके बाद में असम जैसे समस्याग्रस्त प्रदेश का उनको राज्यपाल अन्तिम रूप से नियुक्त किया गया था। लेकिन दुर्दैव ने यह देखा नहीं कि इस पद को संभालने की जिम्मेदारी को निभाने की जो उनमें क्षमता थी, उससे उसको निभाते। वे राज्यपाल के अपने नये पद को संभालने के लिए जाने ही वाले थे, उनके एक दिन पहले जयपुर में अपने सभी मित्रों से प्रेम से मिले, सबके साथ प्रेम से मिले। लेकिन 16 अप्रेल, 1981 को अचानक उनका हृदय गति रुक जाने के कारण देहावसान हो गया।

व्यास जी की स्मृतियां इस सदन में एक मंत्री की तरह से और सदन के अध्यक्ष की तरह से चिरस्मरणीय रहेंगी। उनकी सेवायें सार्वजनिक जीवन में राजस्थान में ही नहीं बल्कि भारत के स्तर पर भी कभी भुलाई नहीं जा सकतीं।

मैं यह मानता हूं कि उनके निधन से न केवल उनके परिवार को क्षति हुई है, सारे समाज को क्षति हुई है, राजस्थान को क्षति हुई है बल्कि राष्ट्र को क्षति हुई है। मैं इस अवसर पर मेरी ओर से और सदन के माननीय सदस्यों की ओर से श्रद्धेय व्यासजी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और ईश्वर उनके शोक-सन्तप्त परिवार को इस दारुण दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करे–ऐसी प्रार्थना करता हूं।

श्री अध्यक्ष : एक साथ ही।

श्री शिवचरण माथुर : अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार इस माननीय सदन के एक अन्य सदस्य श्री संतोषसिंह कछवाहा 1952 में प्रथम विधान सभा के लिये बिलाड़ा निर्वाचन

(श्री शिवचरण माथुर)
क्षेत्र से निर्दलीय सदस्य के रूप में चुने गये थे। उनका भी देहावसान दिनांक 22 जून, 1981 को हो गया। वे बहुत ही कुशल और आधुनिक ढंग से खेती में विश्वास रखने वाले, कट्टर आर्यसमाजी और समाज सेवी व्यक्ति थे। वे कछवाहा महासभा के, 1947 में सैनिक क्षेत्रीय महासभा के अध्यक्ष भी रहे। उनकी निर्माण कार्य और खनन कार्य में विशेष रुचि थी। वे सदन के बहुत ही सम्माननीय सदस्य थे। उनके निधन पर भी मुझे और सदन के सदस्यों को बहुत गहरा क्षोभ है।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके शोक-संतप्त परिवार को इस दारुण दुख को सहने की शक्ति प्रदाने करे।

अध्यक्ष महोदय, इसी माननीय सदन के एक अन्य सदस्य श्री राम सिंह जी, जो 1962 से 1967 तक तृतीय विधान सभा में इस सदन के सदस्य रहे। श्री रामसिंह सवाई माधोपुर से स्वतंत्र पार्टी के टिकट पर चुने गये थे। उनका जन्म 1922 में हुआ। वे प्रारम्भ से ही पंचायत राज संस्थाओं से सम्बन्धित रहे। 1952 से 1959 तक वे लसोड़ा पंचायत के निर्विरोध सरपंच चुने गये और 1960 में पंचायत समिति खण्डार जिला सवाई माधोपुर के प्रधान चुने गये। सदन के सदस्य की हैसियत से मेजर रामसिंह ने विधान सभा की कार्यवाहियों में बड़ा सक्रिय भाग लिया। विशेष रूप से वे सामाजिक क्षेत्र में बनाये गये कानूनों के सम्बन्ध में अपनी गहरी रुचि रखते थे। मेजर रामसिंह का निधन 31 जुलाई, 1981 को हो गया। मैं अपनी ओर से तथा सदन के माननीय सदस्यों की ओर से श्री रामसिंह जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे तथा उनके शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहने की शक्ति दे।

श्री रूपा राम, जो द्वितीय एवम् तृतीय विधान सभा के सदस्य थे, नोखा निर्वाचन क्षेत्र से निर्दलीय सदस्य के रूप में चुने गये थे। सन् 1944 से पिछड़े व दलित वर्ग के उत्थान एवं सामाजिक कुरीतियों के निवारण में विशेष रुचि थी। श्री रूपाराम 1956 से ग्राम पंचायत कोलायत के सरपंच तथा जिला बोर्ड बीकानेर के सदस्य रहे। श्री रूपाराम का निधन 5 मई, 1981 को हुआ। मैं अपनी ओर से तथा सदन के माननीय सदस्यों की ओर से उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें तथा उनके शोक संतप्त परिवार को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति दे।

श्री भैरोंसिंह शेखावत (नेता, प्रतिपक्ष): अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता ने स्वर्गीय श्री रामकिशोर जी व्यास, संतोष सिंह जी कछवाहा, मेजर रामसिंह जी एवं श्री रूपाराम जी के प्रति जो अपनी भावनायें प्रकट की हैं, मैं अपने आपको उन भावनाओं में शामिल करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, श्री रामकिशोर जी व्यास, यदि उनके सारे जीवन का अध्ययन किया जाए तो कई मसलों में हमारे सामने एक आदर्श के रूप में हम सब को प्रेरणा देने की स्थिति में थे। इस विधान सभा में कई बार ऐसे संकट की घड़ी,

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

जो संकट की घड़ी उनके लिए नहीं, कई बार, जिस दल के वे सदस्य थे उस दल के लिये भी और कई बार इस पूरे सदन के लिए उपस्थित हुई, में रामकिशोर जी व्यास का इस प्रकार का व्यक्तित्व था कि उस व्यक्ति ने अपने पद से, अपने स्वभाव से, अपनी भाषा से उस सारी परिस्थिति को इस प्रकार से कन्ट्रोल किया कि जिसे कहना चाहिए कि भगवान ने जैसे उनको इस प्रकार की प्रेरणा देने का एक मंत्र पहले से दिया हुआ हो। विधान सभा में, अध्यक्ष महोदय, बहुत कम आदमी ऐसे होते हैं जिनको किसी न किसी अवसर पर थोड़ा बहुत भी क्रोध नहीं आता हो। मैं ऐसा मानता हूं कि श्री रामकिशोर जी व्यास ने इस सम्बन्ध में इस विधान सभा के 30 वर्षों के इतिहास में कीर्तिमान स्थापित किया है। मैंने अपने जीवन में उनको कभी क्रोधित होते हुए नहीं देखा। उनकी बात से कोई प्रवोक हो जाय, इस प्रकार की स्थिति का कभी उन्होंने निर्माण नहीं किया और न कभी उन्होंने इस प्रकार का अवसर दिया।

इसके साथ ही यदि उनके जीवन को देखा जाए तो जिस अंतिम पद तक वे गये, असम के राज्यपाल के पद पर उनकी नियुक्ति हुई तो कोई सडन राइज नहीं है। जिस स्तर से एक आदमी को राजनैतिक जीवन में अपना कार्य आरम्भ करना चाहिये वहां से कार्य आरम्भ कर समय समय पर सब चीजों का अनुभव प्राप्त करते हुए उन्होंने राज्यपाल का पद सुशोभित किया। कई व्यक्ति सीधे आ जाते हैं, कई व्यक्ति सीधे ही चले जाते हैं, लेकिन रामकिशोर जी व्यास का इस प्रकार का व्यक्तित्व था कि उन्होंने श्रीगणेश नगरपालिका से किया और उनका अन्त राज्यपाल के पद से हुआ। वे मंत्री रहे, कई विभागों का उनको काम करने का अवसर मिला। नगरपालिका के चेयरमैन रहे। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उस व्यक्ति ने समय समय पर जिस प्रकार से भी आदमी को बढ़ना चाहिये उस प्रकार से बढ़ कर अपने कार्य से लोगों को प्रसन्न किया।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात कहे बिना नहीं रहूंगा। व्यासजी की मृत्यु हुई, सब लोगों की मृत्यु होगी। जन्म के साथ ही यह मृत्यु पीछे पड़ती है, इसलिए यह कोई नयी बात नहीं है। हर आदमी, जिसने जन्म लिया है, को एक न एक दिन जाना पड़ेगा। लेकिन उन्होंने जिस प्रकार की मृत्यु प्राप्त की है उससे कई लोगों को जलन होती है। जलन इस रूप में कि या तो संयोग कहिये या उन्हें इस बात की जानकारी थी कि मुझे जाना है। राज्यपाल के पद पर नियुक्ति हो गई। नियुक्ति के कारण वह जयपुर आये और जयपुर से असम जाने की उन्होंने योजना बनाई। जयपुर में आये, आते ही, अध्यक्ष महोदय, जैसे किसी आदमी ने तय कर रखा हो कि अमुक दिन, अमुक समय मुझे जाना है उससे पहले जितने मित्रों से मेरी भेंट हो सके, मिल सकूं इसलिए चुन चुनकर उन्होंने जयपुर शहर में जो भी उनके मित्र थे, सबसे भेंट की और भेंट करने में जिस प्रकार की आत्मीयता का परिचय दिया उस समय तो यह अनुमान नहीं लगता था कि आज यह भेंट हो रही है, अन्तिम भेंट है, लेकिन उनकी मृत्यु के बाद उस सारी चीज को यदि गम्भीरता से देखने की किसी आदमी ने चेष्टा की है तो यह अहसास जरूर हुआ होगा कि व्यासजी कल इतने मीठे क्यों थे, व्यासजी कल जिस आत्मीयता से बात कर रहे थे वह बात उन्होंने क्यों की ? इस

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

समय यह अन्दाज होता है कि उस व्यक्ति को या तो आभास था या कुछ इस प्रकार का संयोग था उनको कल जाना है। मैं, अध्यक्ष महोदय, अस्वस्थ था और अस्वस्थता की हालत में वे एयरपोर्ट से सीधे मेरे पास मिलने के लिये आये और आकर जिस प्रकार मेरा आलिंगन किया, रामकिशोरजी व्यास से मेरे बड़े निकट के सम्बन्ध थे लेकिन मुझे कुछ ऐसा लग रहा था कि शायद रामकिशोरजी व्यास को मेरी बीमारी के कारण से चिन्ता हो रही है और उस चिन्ता के कारण मुझे आलिंगन किया है। मुझे पता नहीं था कि आलिंगन करने के बाद उनको अपनी चिन्ता है वह दूसरे दिन जाने वाले हैं और वह चले गये। इसलिए मैं कहता हूं कि उस व्यक्ति की मृत्यु से भी लोगों को जलन हुये बिना नहीं रह सकती।

जहां तक जयपुर रियासत का सम्बन्ध है, जयपुर नगर का सम्बन्ध है, उनका बड़ा अटूट सा सम्बन्ध था। केवल राजनीतिक क्षेत्र में ही नहीं, उर्दू के क्षेत्र में उनका बड़ा प्रभाव रहा। जब भी कहीं उर्दू के सम्बन्ध में कोई चर्चा होती, रामकिशोरजी व्यास निश्चित रूप से वहां उपस्थित होते। साहित्य के सम्बन्ध में कोई चर्चा होती, रामकिशोर जी व्यास की उपस्थिति निश्चित रूप से होती। इसके साथ ही, अध्यक्ष महोदय, उनमें कला के प्रति भी बड़ा अनुराग था, वह चाहे शेर-शायरी का प्रश्न हो, वह चाहे कविता का प्रश्न हो, वह चाहे कहानियों का प्रसंग हो, चाहे किसी भी प्रकार की कला और संस्कृति का प्रसंग हो, रामकिशोरजी व्यास की उपस्थिति अपने आपमें इस बात का संकेत करती थी कि आयोजकों ने उनको बुला कर निश्चित रूप से कला और संस्कृति के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित किया है। वे इस सम्बन्ध में भी इसके एक प्रतीक थे।

अध्यक्ष महोदय, सादगी के सम्बन्ध में मैं इतना ही कह सकता हूं कि मैंने कई बार उनको अपने घर में देखा। यह नहीं कि वे मिनिस्टर थे, मैं जब जब चला गया, खैर हो सकता है कि बड़े बड़े मंत्रियों के घर पर नौकर हों, सब कुछ हों, लेकिन मैंने कई बार प्रत्यक्ष में देखा है कि मेरे लिये क्या मेरे पास में जो बैठे लोग थे उनके लिये चाय-पानी लाने का काम मंत्री महोदय स्वयं ही करते थे और उनको स्वयं करने में आनन्द आता था। कई लोग यह कहते थे कि मेरे यहां पर नौकर नहीं है इसलिये मैं ला रहा हूं। लेकिन मैं ऐसा समझता हूँ कि वे ऐसे व्यक्ति थे कि लाने में अपनी सर्विसेज देकर वह अपने आपको आनन्दित अनुभव करते थे। चाय पिलानी होती तो खुद पिलाते, कुछ खिलाना होता तो खुद खिलाते। मुझे यह कहने में भी संकोच नहीं कि उनको खाने-पीने का शौक था। जब भी उनके पास कोई व्यक्ति गया उसको वह रुचि से अगर नहीं खिलायें तो रामकिशोरजी की तबीयत ठीक नहीं रहती थी, चाहे मिठाई हो, चाहे नमकीन हो रामकिशोरजी के साथ यह चीजें जुड़ी हुई थीं। उनके यहां जो जाते थे वह भी यह समझ कर जाते थे कि मुझे खाने को मिलेगा और रामकिशोरजी व्यास जहां जाते थे वह भी यह समझते थे कि मुझे यहां कुछ खाना पड़ेगा। ऐसी स्थिति में मैं यह समझता हूं कि एक भारी परिस्थिति में, एक सारी विशेषताओं के प्रतीक के रूप में हमने एक व्यक्ति को खोया है।

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

मैं ऐसा समझता हूँ कि विधान सभा में अध्यक्ष रह कर उन्होंने बहुत बढ़िया परम्परायें स्थापित कीं। जिस वक्त वह अध्यक्ष बने मैं राजस्थान विधान सभा का सदस्य नहीं था लेकिन मेरा अनुमान था कि राजस्थान विधान सभा का संचालन वह अपने मृदुभाषी और सीधे होने के कारण सम्भवत: नहीं चला पायेंगे। लेकिन मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है, मैं आज नहीं कहता, अध्यक्ष महोदय, उनकी जीवित अवस्था में भी मैंने कई बार कहा है कि इस सदन का संचालन जिस गम्भीरता और निष्पक्षता से रामकिशोरजी व्यास ने किया वह हम सब के लिये प्रेरणादायक है, उदाहरणीय और अनुकरणीय है। इस आभास का भी कोई आज के दिन इन्कार नहीं कर सकता है। ऐसी स्थिति में उस व्यक्ति को खोकर निश्चित रूप से हमें जो घाटा हुआ है उस घाटे की पूर्ति किस प्रकार से हो सकती है वह हम सब देखें। लेकिन मैं ऐसा समझता हूं कि उस व्यक्ति के प्रति सदन में सच्चे हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित की जाय उस सम्बन्ध में माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो सदन के सामने अपनी भावनायें व्यक्त की हैं मैं भी उनके साथ अपनी भावनायें जोड़ता हूं।

अध्यक्ष महोदय, संतोषसिंह कछवाहा मेरे साथ विधान सभा के सदस्य रहे हैं, मेजर रामसिंह जी और श्री रूपारामजी भी इस सदन के सदस्य रहे हैं। सौभाग्य से इन तीनों के साथ मुझे इस सदन में काम करने का मौका मिला है, तीनों अच्छे मित्र थे, अच्छे व्यक्ति थे, अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व ठीक प्रकार से करते थे। वह तीनों भी हमारे बीच से उठ गये। मैं उनके प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इन चारों आत्माओं को शांति प्रदान करे और उनके शोक संतप्त परिवार को उनके इस बिछोह के कारण उत्पन्न संकट से किस प्रकार से निपटें–इस सम्बन्ध में शक्ति प्रदान करे।

इन्हीं शब्दों के साथ जो प्रस्ताव माननीय मुख्य मंत्री जी ने रखा है मैं उसका समर्थन करता हूँ।

श्री राजबहादुर (भरतपुर) : अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता और विपक्ष के नेता ने स्वर्गीय श्री रामकिशोरजी व्यास के सम्बन्ध में जो कुछ अपने शोक संदेश में कहा है मैं अपने को उससे जोड़ता हूं। मैं समझता हूं कि उन्होंने हम सबकी भावनायें व्यक्त की हैं, मैं उनके विचारों से, भावनाओं से अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। व्यास जी के नेतृत्व तथा उनके चरित्र का चित्रण किया गया है उसमें अपने आपको जोड़ता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मुझे भी यह गौरव प्राप्त हुआ सदन के अन्दर तो नहीं किन्तु बाहर, उनके एक मित्र एवं साथी के नाते 30–35 वर्ष तक उनके निकट सम्पर्क में आने का। उनके व्यक्तित्व, उनके चरित्र एवं उनके स्वभाव से यह अक्षरश: आभास होता था कि वह एक जेन्टलमैन, एक आदर्श सज्जन पुरुष थे। उनको यहां व्यवहार में ऊपर एक आदर्श व्यक्ति के रूप में कहा गया है तो बिलकुल ठीक कहा गया है। मैंने उन्हें कभी भी गुस्सा करते नहीं देखा, कभी कोई ऐसी बात उन्होंने नहीं कही जो दूसरे को बुरी लगे या किसी को उत्तेजना मिले। यह बड़ा भारी गुण है। इसी कारण जो सदन के नेता ने कहा कि वे अजातशत्रु थे, कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

(श्री राजबहादुर)

श्री राम किशोर जी व्यास का जन्म उस पीढ़ी में हुआ जिसने देश के ऊपर छायी दासता की काली रातें देखी थीं, जिसने आजादी का संघर्ष भी देखा था। व्यासजी ने गुलामी देखी थी और आजादी का संघर्ष, वह सुनहरा संघर्ष भी देखा था। उसके उपरान्त जो आजादी हमारे देश में आयी वह देखी। भारत का निर्माण हुआ वह देखा। नव भारत का सृजन और निर्माण हुआ वह देखा। उन्होंने उसमें भी सक्रिय भाग लिया, सतत् भाग लिया और अन्त में वह राज्यपाल भी बने। दुर्भाग्यवश राज्यपाल बनने के बाद उनका देहावसान हुआ। मैं तो इतना ही और कहना चाहता हूं कि हमारी मिली जुली जो सभ्यता है, हमारी तहजीब है जिसे हम गंगायमुनी संस्कृति कहते हैं उसके वह प्रतीक रहे। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार को शांति प्रदान करे और उस पुनीत आत्मा को चिर शांति प्रदान करे।

इसके अलावा बाकी तीन सदस्यों के निधन के बारे में जो शोक प्रस्ताव रखा गया है, उनसे मेरी व्यक्तिगत जानकारी तो नहीं रही लेकिन एक सदन के सदस्य के नाते स्वर्गीय श्री संतोषसिंह जी कछवाहा, मेजर श्री राम सिंह जी और श्री रूपाराम जी के शोक संतप्त परिवार के प्रति मैं अपनी सद्भावना और संवेदना प्रकट करता हूं और दिवंगत आत्माओं को ईश्वर शांति दे, यह प्रार्थना करता हूं।

श्री वीरेन्द्र प्रताप सिंह (गुढ़ा) : अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता ने जो माननीय रामकिशोर जी व्यास और तीन सदस्यों के स्वर्गवास पर शोक प्रस्ताव पेश करा है उसके बारे में मैं मेरे दल की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। माननीय रामकिशोर जी व्यास इस राजनैतिक मंच से चले गये यह एक अपूरणीय क्षति हुई है। मेरा उनसे परिचय सन् 1969 के बाई इलेक्शन में खेतड़ी में हुआ था। तब मैं एक साधारण कार्यकर्त्ता था। बुवाई ग्राम में उनकी रिश्तेदारी थी जहां पर मेरी भेंट हुई। उस वक्त उन्होंने महसूस नहीं होने दिया कि हम विरोधी दल के हैं और वह सत्ता पक्ष के। अध्यक्ष महोदय, जैसा कि उनका स्वभाव था हरेक से बड़े मिलनसार थे। उन्हीं के गुणों की आज याद की जा रही है। मेरा अपने साथियों से यह निवेदन है कि उनके उस अनुकरणीय व्यवहार से हम प्रेरणा ग्रहण करें और उसको सच्चे रूप से जीवन मे उतारें। यही एक सच्ची श्रद्धांजलि उनके प्रति होगी।

मेरा ईश्वर से निवेदन है कि उनके शोक संतप्त परिवार को इस महान् दुख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

इस सदन के अन्य माननीय सदस्य श्री संतोष सिंह जी कछवाहा, मेजर श्री रामसिंह जी और श्री रूपाराम जी से मेरा कोई व्यक्तिगत परिचय नहीं रहा परन्तु जैसा अन्य साथियों से मालूम पड़ा है वह इस सदन की कार्यवाहियों में बहुत ही सक्रिय भाग लेते थे और अपने क्षेत्र की समस्याओं को पूरे जोर-शोर से उठाते थे जो एक अनुकरणीय चीज है। मैं अन्तःकरण से हार्दिक श्रद्धांजलि उनके प्रति अपनी तरफ से, अपने दल की तरफ से अर्पित करता हूं। ईश्वर उनके शोक संतप्त परिवार को इस शोक को सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

श्री मेघराज तावड़ (गोगुन्दा) : अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता, विरोधी पक्ष

(श्री मेघराज तावड़)
के नेता और हमारे साथी माननीय सदस्य ने राम किशोर जी व्यास के निधन पर उनके कार्य क्षेत्र, उनके चरित्र, उनकी कार्य कुशलता के ऊपर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अच्छा प्रशासक, समाज का सर्वगुण सम्पन्न व्यक्तित्व हमारे बीच में राजस्थान से उठ गया। ऐसा व्यक्तित्व राजस्थान में और समाज के सभी क्षेत्र में चाहे राजनैतिक हो, चाहे सामाजिक क्षेत्र हो, चाहे कला का हो साहित्य का हो, हमने खो दिखाया है। उसकी क्षतिपूर्ति बड़ी कठिन है। वह एक प्रगतिशील व्यक्ति थे, इण्डो-सोवियत कल्चरल सोसाइटी के भी अध्यक्ष रह चुके थे, ऐसा प्रगतिशील, गरीब व्यक्तियों का नुमाइन्दा राजस्थान से उठ जाना गरीबों के लिये बहुत बड़ी हानि है। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

साथ ही इस सदन के तीन माननीय सदस्य संतोषसिंह जी, मेजर राम सिंह जी और रूपाराम जी से मेरा कभी कोई परिचय नहीं रहा, कभी सम्पर्क नहीं रहा लेकिन सदन की कार्यवाहियों से, उनकी भूमिका का मनन करने से हमें बड़ा दुःख है कि ऐसे साथियों, जो समाज का नेतृत्व करते थे, को यहां पर श्रद्धांजलि दी गई है। मैं भी अपने दल की ओर से अपनी तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री **मोहनलाल मोदी** (नीम का थाना): अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता ने स्वर्गीय रामकिशोर जी व्यास के निधन के बारे में शोक प्रस्ताव रखा है मैं उसमें अपने आपको अपने दल की ओर से शामिल करते हुए निवेदन करना चाहता हूं कि रामकिशोरजी व्यास को राजस्थान का बच्चा-बच्चा जानता है कि वह कितने मृदुभाषी थे, कितने सहनशील थे और उनमें कितनी कार्य की लगन थी। एक साधारण कार्यकर्त्ता भी उनके पास किस तरह से जाकर अपनी बात कह सकता था। वह इस सदन के अध्यक्ष रहे, राजस्थान के गृह मंत्री रहे और भी बड़े-बड़े मंत्री पद को उन्होंने सुशोभित किया। वह प्रगतिशील विचारों के व्यक्ति थे और उनमें एक ठोस निर्णय लेने की क्षमता थी। ऐसी जब कोई संकट की घड़ी आती थी उसमें उनके जो निर्णय हैं उनको आप देखेंगे तो मैं यह समझता हूं कि ऐसे निर्णय उन्होंने लिये कि राजस्थान के बहुत से बड़े-बड़े लोग भी ऐसा निर्णय नहीं ले सके। एक ऐसा समय आया था जब कांग्रेस का विभाजन हुआ और कांग्रेस (आई) की स्थापना हुई उस समय स्वर्गीय रामकिशोर जी व्यास का निर्णय, जो उन्होंने लिया, को सारे लोग मानते हैं। उस समय वहीं एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने ठोस निर्णय लिया और आम कार्यकर्त्ता को अपने साथ जोड़ कर राजस्थान की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहे।

स्वर्गीय रामकिशोरजी व्यास के निधन से राजस्थान के लोगों को जो क्षति हुई है वह पूरी नहीं हो सकती है। मैं समझता हूं कि उन्होंने अपने जीवनकाल में जयपुर की जनता को, राजस्थान के लोगों को आगे बढ़ाने का जो कार्य किया है वह अविस्मरणीय है। मैं उनको अपनी ओर से, अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार को दारुण दुःख, कष्ट सहने की शक्ति प्रदान करे।

साथ ही इन तीन साथियों, संतोष सिंहजी कछवाहा, मेजर रामसिंह जी और

(श्री मोहन लाल मोदी)

रूपारामजी के लिये जो शोक प्रस्ताव पेश किया है उनको भी मैं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार को इस दारुण दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करे।

श्री त्रिलोक सिंह (फतहपुर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता ने श्री रामकिशोरजी व्यास, संतोषसिंहजी कछवाहा, मेजर रामसिंहजी और रूपारामजी के प्रति जो अपनी भावना पेश की है उस भावना में मैं अपने आपको शरीक करता हुआ मेरी और मेरे दल की ओर से उनके दुःखी परिवार के प्रति संवेदना जाहिर करता हूं।

श्री यदुनाथ सिंह (नदबई) : अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता ने जो शोक प्रस्ताव रखा है और जिसका समर्थन विपक्ष के नेता ने और माननीय दलों के नेताओं ने किया है उसमें मैं अपने आपको और अपने दल को सम्मिलित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, रामकिशोरजी व्यास से मेरा स्वयं का व्यक्तिगत और घनिष्ठ पारिवारिक सम्बन्ध था, उनके जाने से मेरे को स्वयं को ऐसा आघात लगा जैसे मेरे घर का, स्वयं के घर का बुजुर्ग हमारे बीच से उठ गया हो। रामकिशोरजी व्यास को बहुत निकट से देखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। रामकिशोरजी व्यास के बारे में यह कहा जा सकता है कि वह परफेक्ट पर्सनेलिटी थे, वे हिन्दी, संस्कृत, उर्दू और फारसी के न सिर्फ ज्ञाता थे बल्कि इन भाषाओं के अच्छे विद्वान भी थे। संस्कृति में, कला में, संगीत में और इस तरह के जो सामाजिक कार्य हैं उनमें उनकी विशेष आस्था और समझ थी।

जहां तक विधान सभा का प्रश्न है और राजनैतिक जीवन का प्रश्न है उन्होंने लगभग प्रत्येक विभाग के मंत्री के रूप में राजस्थान में कार्य किया। एक छोटे सी नगरपालिका से बढ़ कर वह इस विधान सभा के अध्यक्ष भी बने और यहां पर उन्होंने कुछ मान्यताओं और मूल्यों की स्थापना की। इसके बाद वह राज्यपाल के चरम पद पर पहुंचे और अन्तिम समय में उनको असम के लिए उपयुक्त पाया गया जब कि असम उस समय में और आज भी एक कठिन परिस्थिति से गुजरता हुआ हमारे देश का टुकड़ा है। इसी से जाहिर होता है कि श्री रामकिशोरजी व्यास की प्रशासनिक योग्यतायें कितनी उत्तम रही होंगी।

रामकिशोरजी व्यास अक्सर कहा करते थे कि बेटा, कभी ऐसा कार्य राजनीति में ना करना जिससे आप सिर नीचा करके चलें। मुझे तो जीवन भर उनके यह शब्द याद रहेंगे ही, वह एक बात और कहा करते थे कि पार्टियां विधान सभा चुनाव और नीतियों के संघर्ष के लिए हुआ करती हैं बाकी सभी पार्टियों का ध्येय अपने राज्य की जनता, अपने देश की जनता और अपने क्षेत्र की जनता की बहबूदी और उन्नति के लिए होता है। तो मैं उम्मीद करता हूं कि यहां पर यही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि इस सदन के सदस्य और यहां के मंत्रिगण, सब लोग उन्होंने जो मान्यतायें और मूल्य स्थापित किये उन पर चलें। यह श्रद्धांजलि सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

साथ ही तीन और माननीय भूतपूर्व सदस्यों के प्रति जो शोक प्रस्ताव रखा है

(श्री यदुनाथ सिंह)
उसमें भी मैं अपने आपको और मेरे दल को सम्मिलित करते हुए उनके शोक संतप्त परिवार के लिए शांति और उनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

श्री अध्यक्ष : सदन के नेता महोदय, विपक्ष के नेता महोदय और इस सभा के विभिन्न दलों के नेतागणों ने स्वर्गीय श्री रामकिशोरजी व्यास, श्री संतोषसिंहजी कछवाहा, मेजर रामसिंहजी, श्री रूपाराम जी के निधन पर जो शोक प्रकट किया है उसमें मैं अपने आपको सम्मिलित करता हूं।

स्वर्गीय श्री रामसिंहजी से मेरे मिलने का अवसर नहीं हुआ लेकिन स्वर्गीय व्यास जी, श्री रूपारामजी और संतोषसिंहजी कछवाहा से मेरा काफी निकट का सम्बन्ध रहा है।

जहां तक स्वर्गीय व्यास जी का प्रश्न है वह बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने छोटे से बड़े सभी पदों पर बहुत ही योग्यता, लगन और मेहनत से कार्य किया। उनकी यह कार्य कुशलता हम सबके लिए एक उदाहरण है।

विपक्ष के नेता महोदय ने एक बात कही है कि मंत्रीजी के रूप में जब कभी वे सदन के समक्ष आते थे तो अपना कभी धैर्य नहीं खोते थे, कभी आवेश में नहीं आते थे। यह बात बिलकुल सही है। सबसे अधिक यदि किसी बात ने मुझे प्रभावित किया तो श्री व्यासजी का कठिन से कठिन परिस्थितियों में धैर्य नहीं खोना और सदन के सामने सदन के सदस्यों को संतुष्ट करने की आखिर तक कोशिश करना। इस सभा में बहुत बड़ी संख्या में मंत्री आये हैं, कार्य किया है, आज भी कर रहे है लेकिन सबसे बड़ी बात और सबसे बड़ी खूबी मैंने श्री रामकिशोर जी में यह पाई कि वे जिस वक्त प्रश्नों का उत्तर देते थे अथवा वाद-विवाद का उत्तर देते थे तो कैसी भी परिस्थितियां सामने आ जायं, वे कभी धैर्य नहीं खोते थे और उनकी यह कोशिश रहती थी कि यदि माननीय सदस्य संतुष्ट नहीं हुए हैं तो उनको किस तरह संतुष्ट किया जाय।

श्री व्यासजी विभिन्न क्षेत्रों में आखिरी दम तक कार्य करते रहे। वे बहुत ही उच्च कोटि के राजनेता थे, राजनीति में अच्छे तरीके अपनाने में विश्वास करते थे, अच्छे समाज सेवक थे। साहित्य में, कला में, संस्कृति में–इन सबमें उनकी बहुत ही गहरी रुचि थी और उन्होंने इन सब क्षेत्रों में काम किया और हमारे सामने एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया।

आज वे तो हमारे बीच में नहीं रहे लेकिन उनको सच्ची श्रद्धांजलि यही हो सकती है कि उन्होंने जो कुछ किया अपने जीवन काल में, जैसी अच्छी परम्परायें उन्होंने स्थापित कीं हर एक छोटे बड़े पद पर रह कर–उन सबको हमें अपनाने की कोशिश करनी चाहिये। विधान सभा के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने इस पद को सुशोभित किया। जैसा कि विपक्ष के नेता महोदय ने कहा, वे बहुत धैर्य से काम लेते थे और कैसी भी मुश्किल परिस्थिति हो, वे सदन में अनुशासन बनाने में सक्षम होते थे। उनकी जो यह अच्छी परम्परायें विधान सभा को

(श्री अध्यक्ष)
विरासत में मिली हैं उनको हमें निभाने की कोशिश करनी चाहिये।

एक कहावत है, अन्त भला सो भला, उन्होंने मृत्यु भी ऐसी पाई जो बहुत ही सौभाग्यशाली लोग हैं, वे ही प्राप्त कर सकते हैं। वे राज्यपाल थे पाण्डीचेरी के, वहां उन्होंने बहुत ही मेहनत, लगन और योग्यता से कार्य किया। इससे प्रभावित होकर केन्द्रीय सरकार ने उनको असम और पूर्व के जो दूसरे प्रदेश हैं, उनका राज्यपाल नियुक्त किया। राज्यपाल नियुक्त होने के पश्चात् उनका पत्र मेरे पास भी आया लेकिन दुःख की बात है कि मैं उस समय बाहर था इसलिये उनसे नहीं मिल सका और उनके दर्शन नहीं कर सका। उनके स्वर्गवास के बाद ही दर्शन कर सका। उनके भाग्यशाली होने का सबसे बड़ा सबूत यह है, जब वे अपने जीवन के सबसे उच्च पद पर जा रहे थे तो अपने प्रिय नगर, जहां उनका जन्म हुआ वहां पर वे आये, अपने स्वजन, अपने मित्र और प्रशंसक–उन सबके बीच में हंसी खुशी के माहौल में एकदम उठकर संसार से चले गये। उनको शायद यह आभास भी नहीं हुआ होगा कि मैं अभी जा रहा हूं क्योंकि जिस तरीके से उनकी मृत्यु हुई उसमें चन्द क्षण, दो-चार मिनट ही लगे।

जीवन काल में जब तक वे जीये सुख से जीये, समाज की सेवा की, अच्छे उदाहरण प्रस्तुत करने की कोशिश की और जब गये भी तो बिना किसी को तकलीफ दिये एक ऐसे माहौल में गये जो तकदीर वाला होता है उसको ही मिल सकता है।

उनके निधन से खास तौर से हमारे प्रदेश को और हमारे राष्ट्र को अपार क्षति हुई है, जिस काम पर वे जा रहे थे वह कार्य भी देश के सामने एक बड़ी समस्या बना हुआ है उसके अलावा भी अपने देश में और प्रदेश में कई तरह की समस्यायें आज खड़ी हैं। इस तरह की सूझ बूझ वाला, अनुभव वाला व्यक्ति हमारे बीच से अचानक उठ जाय, यह हम सब के लिए बहुत ही दुर्भाग्य की बात है। जो कुछ भी क्षति उनके हमारे बीच से उठ जाने से हुई है उसकी पूर्ति होना बहुत ही कठिन है।

मैं परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उनकी आत्मा को चिर शांति प्रदान करे और उनके परिवार जनों को जो दुःख हुआ है, जो आघात लगा है उसको वहन करने की शक्ति दे।

श्री संतोष सिंह जी कछवाहा, जैसा कि मैंने पूर्व में कहा, मेरे बहुत पुराने मिलने वाले थे, जोधपुर के निवासी थे और आखिरी दम तक वे सक्रिय रहे। समाज सुधार में उनकी गहरी रुचि थी और जीवन पर्यन्त वे समाज सुधार के कार्यों में लगे रहे।

मेजर रामसिंह जी से मेरे मिलने का इत्तफाक नहीं हुआ लेकिन मैंने जो कुछ सुना उससे यह मालूम हुआ कि वे ग्रामीण विकास में कृषि के विकास में गहरी रुचि रखते थे। इस सभा के सदस्य रहे तो उन्होंने अपने क्षेत्र की तरक्की के विषय में सदैव कोशिश की।

इसी तरह से स्वर्गीय श्री रूपाराम जी दो बार मेरे साथ इस सभा के सदस्य रहे हैं। उनके क्षेत्र में मैंने कई बार दौरे भी किये। वे पिछड़े वर्ग के थे लेकिन अपने समय के बड़े उत्साही कार्यकर्त्ता थे। उस समय की जो सामाजिक परिस्थितियां

(श्री अध्यक्ष)

थीं वे आज से भिन्न थीं। उन्होंने मुश्किल परिस्थितियों में मरुस्थल के इलाकों के अन्दर समाज सेवा की, राजनैतिक चेतना लाये और शिक्षा के क्षेत्र में खास तौर से उन्होंने कार्य किया, वह सराहनीय है। उन तीनों को परम पिता परमात्मा चिर शांति प्रदान करे और उनके परिवारजनों को यह महान् दुःख झेलने की शक्ति दे—यही मेरी प्रार्थना है।

मैं अब आप सबसे निवेदन करूंगा कि दो मिनट अपने स्थान पर मौन खड़े होकर श्रद्धांजलि अर्पित करें।

(सदन ने दो मिनट मौन खड़े रह कर दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित की।)

स्थान ग्रहण कीजिए।

सदन की कार्यवाही कल प्रातः 11.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही म.पू. 11.49 बजे मंगलवार, दिनांक 15 सितम्बर, 1981 के म.पू. 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई।)